एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

गाजर घास से बनाये कम्पोस्ट

(*डॉ लोकेश गौड, प्रियंका सिसोदिया एवं डॉ उत्तम प्रकाश शर्मा)
स्कूल ऑफ ऐग्रीकल्चर सांइस, डबोक
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: gourjnkvv@gmail.com

आज भारत में गाजर घास जिसे कॉंग्रेंस, घास, चटक चांदनी, कड़वी घास आदि नामां से भी जाना जाता है। यह खरपतवार न केवल किसानों के लिये अपितु मानव, पषुओं, पर्यावरण एवं जैव–विविधता के लिये एक बड़ा खतरा बनती जा रही है।

गाजर घास से कम्पोस्ट बनाने के विधिः–वैज्ञानिकों द्वारा यह संतुष्टी दी जाती है कि कम्पोस्ट बनाने के लिये गाजरघास को फूल आने से पहले ही उखाड़ लेना चाहिये। फूल विहीन गाजरघास का कम्पोस्ट बनाने में उपयोग बिना किसी डर के ''नाडेप'' विधि या खुल्ले गढ़ढा विधि में किया जा सकता है। पर वास्तव में खेतों की परिस्थितियों और वातावरण में यह संभव नहीं हो पाता। गाजरघास को सर्दी–गर्मी के प्रति असंवेदनषील बीजों में षुषुप्तावस्था न होने के कारण एक ही समय में फूल युक्त और फूल विहीन गाजरघास के पौधे खेतों में दृष्टिगोचर होते हैं। अतः निदाई करते समय फूल युक्त पौधों को उखाड़ना भी अपरिहार्य हो जाता है। फिर भी किसान भाईयों को गाजरघास को कम्पोस्ट बनाने में उपयोग करने के लिये हर संभव प्रयास करने चाहिये कि वो उसे ऐसे समय उखाड़े जब फूलों की मात्रा कम हो। जितनी छोटी अवस्था में गाजरघार को उखाड़ेगें उतना ही अधिक अच्छा कम्पोस्ट बनेगा और उतनी ही फसल की उत्पादकता बढ़ेंगी। निम्नलिखित विधि द्वारा गाजरघास से कम्पोस्ट बनायी जा सकती है।

1. अपने खते या भूमि पर एक उपयुक्त थोड़ी ऊंचाई वाले स्थान पर जहाँ पानी का जमाव न होने पावे, एक 3x6x10 फीट (गहराई चौड़ाई लम्बाई) आकार का गढ़ढा बना ले। अपनी सुविधानुसार और खेत में गाजरघास की मात्रा के अनुसार लम्बाई चौड़ाई कम कर सकते हैं पर गहराई तीन फीट नहीं होनी चाहिये।
2. अगर संभव हो सके तो गढ़ढे की सतह पर और साइड की दीवारों पर पत्थर की चीपें इस प्रकार लगायें कि कच्ची जमीन का गढ़ढा एक पक्का टांका बन जाये। इसका लाभ यह होगा कि कम्पोस्ट के पोषक तत्व गढ़ढे की जमीन नहीं सोख पायेगी।
3. अगरी चीपों का प्रबंध न हो पाये तो गढ़ढे के फर्ष और दीवार की सतह में मुगदर से अच्छी प्रकार पीटकर समतल कर लें।
4. अपने खेतों की फसलों के बीच से, मेढ़ो से आस–पास के स्थानों से गाजरघास को जड़ समेत उखाड़कर गढ़ढे के समीप इकट्ठा कर लें।
5. गढढे के पास 75 से 100 कि.ग्रा. कच्चा गोबर, 5–10 कि.ग्राम यूरिया या रॉक फॉस्फेट की बोरी, भुरीभुरी या कापू मिट्टी (एक या दो क्विंटल) और एक पानी के ड्रम की व्यवस्था कर लेनी चाहिये।
6. लगभग 50 कि.ग्राम गाजरघास को गढ़ढे की पूरी लम्बाई –चौडाई में सतह पर फैला दें।
7. 5–7 कि.ग्राम गोबर को 20लीटर पानी में घोल बनाकर उसका गाजरघास की परत पर छिड़काव करें।
8. इसके ऊपर 500 ग्राम यूरिया 3. कि.ग्राम रॉक या फास्फेट का छिड़काव करें।

9. उपलब्ध होने पर ट्राइकोडरमा विरिडि अथवा ट्राइकोडरमा हरजानिया नामक कवक के कल्चर पाउडर को 50 ग्राम प्रति परत के हिसाब से डाल दें। इस कवक कल्चर को डालनेसे गाजरघास के बड़े पौधों का अपघटन भी तेजी से हो जाता है एवं कम्पोस्ट शीघ्र बनती है। चूंकि दूर–दराज के गॉव–देहातों में इस कल्चर का मिलना कठिन होता है। अतः इस कारक का प्रयोग इसकी उपलब्धि पर निर्भर है।
10. इस प्रकार इन सब अवयवों को मिलाकर एक परत या लेयर बना लें।
11. इसी प्रकार एक परत के ऊपर दूसरी–तीसरी और अन्य परतें तब तक बनाते जायें जब तक गढ़ढ़ा ऊपरी सतह से एक फीट ऊपर तक न भर जाये। ऊपरी सतह की परत इस प्रकार दबायें कि सतह डोम के आकार की हो जाये। परत जमाते समय गाजर घास के पैरों से अच्छी तरह दबाते रहना चाहिये।
12. अब इस प्रकार भरे गढ़ढे को गोबर, मिट्टी, भूसा आदि के मिश्रण लेप से अच्छी प्रकार बंद कर दे। 5–9 माह बाद गड्डा खोलने पर अच्छी कम्पोस्ट प्राप्त होती हैं।
13. उपरोक्त वर्णित गढ़ढे में 37 से 42क्विन्टल ताजी उखाड़ी जगारघास आ जाती है जिससे 37 से 45% कम्पोस्ट प्राप्त हो जाती है।

कम्पोस्ट की छनाई :– 5–6 माह बाद भी गढ़ढे से कम्पोस्ट निकालने पर आपकों प्रतीत हो सकता है कि बड़े मोटे तनों वाली गाजर घासर अच्छी प्रकार से गली नहीं है। पर वास्तव में यह गल चुकी होती है। इस कम्पोस्ट को गढ़ढे से बाहर निकालकर छायादार जगह में फैलाकर सुखा लें। हवा लगते ही यह नम एवं गीली कम्पोस्ट शीघ्र सूखने लगती हैं। थोड़ा सूख जाने पर इसका ढेर कर लें। यदि अभी भी गाजरघास के रेषें युक्त तने मिलते है तो इसके ढेर को लाटी या मुगदर से पीट दें। जिन किसान भाईयों के पास बैल या ट्रेक्टर हैं, वे इन्हें इसके ढेर पर थोड़ी देर चला दें। ऐसा करने पर गाजरघास के मोटे रेषे युक्त तने टूटकर कर बारीक हो जायेगें जिससे और अधिक कम्पोस्ट प्राप्त होगी।